फोटो– अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

रेडियो और वियतनाम वार

– जगमोहन चोपता

समाचार में आये नये नाम व घटनाओं को बाबा खूब विस्तार से बताते। किसी भी देश की घटना या राजनैतिक चर्चा को बाबा बड़ी सहजता से बताते। ऐसे में वे भूल जाते कि छोटू और उसके भाई को पढ़ना भी है।

गांव में शाम होते ही सन्नाटा गहराने लगता। बच्चे भी तेज–तेज कदमों से अपने घरों की ओर लौटते। घरों में रेडियो की तेज आवाज सन्नाटे को तोड़ने का काम करती। नज़ीबाबाद रेडियो स्टेशन से जब–तब गढ़वाली गाने प्रसारित होते। ऐसे में घरों में चूल्हा जला रही ब्वारियां (बहुएं) इन गानों को गुनगुनाते हुए रेडियो का साथ देतीं तो रास्तों में दारू पीकर घरों की ओर लौट रहे झांझी भी इनकी लाइनों को नशे की लड़खड़ाहट में अपने अंदाज में गुनगुनाते।

बच्चे हाथ–मुंह धुलकर किताबें खोलकर बैठते लेकिन मनपसंद गीत आने पर वो भी गुनगुनाने से बाज नहीं आते। ऐसे में बाबा बीच में डपट देते 'ऐ अपण ध्यान किताबों पर द्यो।' (अरे अपना ध्यान किताबों पर दो!) छोटू हड़बड़ाकर झेंपते हुए फिर किताबों को बांचने पर पिल पड़ता।

बहुत से ऐसे गीत आते जिनमें जगहों का वर्णन होता जिनको सुनते ही छोटू इन जगहों के बारे में सोचने लगता। ऐसा ही एक गीत था– 'कमला की ब्वेई पकेदे रोटी, गाड़ी ल जाण पीपलकोटी। छोटू सोचता कितना बड़ा होगा पीपलकोटी? क्या वो कर्णप्रयाग से बड़ा होगा। अभी तक गांव के अलावा छोटू ने सिर्फ कर्णप्रयाग को ही देखा था।

कर्णप्रयाग जाते हुए भी छोटू के साथ बहुत ही मजेदार वाकया हुआ। बाबा के साथ वह सुबह उठकर अपनी स्कूल ड्रेस पहनकर तैयार हो गया। कहीं आने–जाने के लिये स्कूल के कपड़ों से ज्यादा नये कपड़े तब घर में होते ही नहीं थे। ये कपड़े स्कूल और अन्य शादी ब्याह या रिश्तेदारी में आने–जाने के काम आते थे। 6 किलोमीटर पैदल चलकर जैसे–जैसे नलगांव नजदीक आता छोटू गाड़ियों के डर से बाबा के और नजदीक चिपक कर चलने लगता। नलगांव में बाबा जिसको भी नमस्ते करता छोटू भी चट पांव छूकर नमस्ते करता। बाबा बताना नहीं भूलते छ्वटा वाल नौन च हो (छोटा वाला बेटा है)।

कर्णप्रयाग की बस में बैठते ही गाड़ी हिचकोले खाते हुए चलने लगी। गाड़ी किसी ढलान पर तिरछी होती तो छोटू सीट के डंडे को पकड़कर पूरी ताकत से गाड़ी को सीधा

करने में जोर लगाता। साथ ही डरता भी कि गाड़ी अभी गिरी या तभी गिरी। गाड़ी को सीधा करने के चक्कर में छोटू के पसीने छूट जाते। इसका एक फायदा यह होता कि गाड़ी पर इतना ज्यादा ध्यान देने से रास्ते भर उल्टी नहीं हुई। कर्णप्रयाग पहुंचकर बाबा कुछ दुकानों में जाते और फिर शाम को वापस आ जाते। कर्णप्रयाग की गलियां, दुकान सभी कुछ छोटू के लिये किसी रहस्यलोक से कम नहीं थे। बीच में कहीं खो जाने के डर से वह बाबा का हाथ पकड़े रहना नहीं भूलता। बाबा भी पिण्डर नदी पर बने पुल, रास्तों में कस्बों और दुकानों के बारे में कुछ न कुछ बताते जाते। ऐसे में छोटू हर बात को ध्यान से सुनता। छोटू ने नदी के संगम को दूर से देखा। कर्णप्रयाग के कर्ण मंदिर के बारे में उसने शिशुपाल से बहुत सुना था आज साक्षात् देख भी लिया।

ऐसे ही रेडियो पर एक और गीत आता था– 'मेरा सतपुली का सैंण मेरी बो सुरीला'। इस गीत को सुनते ही सतपुली के सैंण का दृश्य कर्णप्रयाग के तंग बाजार से मेल न खाने के बावजूद छोटू वहां भी पिण्डर जैसी नदी, पुल, दुकानों में लटके अधपके मुर्गे और वैल्डिंग की दुकान की कल्पना करता।

वहां के लोग कैसे रहते होंगे, क्या करते होंगे को लेकर छोटू कल्पनालोक में खो जाता। ऐसे में चूल्हे से मां की आवाज– 'ऐ रवट्‌ा बणी ऐ जो खाण', उसको कल्पनालोक में वापस लाती।

रोटी खाते–खाते छोटू बाबा से पूछता सतपुली का सैंण क्यों कहते होंगे। फिर बाबा सतपुली के बारे में बताते हैं कि नयार नदी के किनारे बसा है। मां भी बीच में जोड़ती– 'द वहां तो सड़क के कितने मोड़ है, ऐ मांजी जाण–जाण उल्टी ह्वे के आफत ऐ जैन'। बाबा समझ जाते कि रेडियो में आये शब्दों को छोटू जब तब पूछता है। ऐसे में कई बार वे डपट देते ज्यादा रेडियो पर ध्यान न दे। अपण किताबों पर ध्यान दे। छोटू चुपचाप कोदे की रोटी का कौर मुंह में डालते हुए हां में सर हिला देता।

रेडियो पर बीबीसी समाचार आते ही घर में आपातकाल लागू हो जाता। किसी को खुसर–फुसुर की कोई इजाजत नहीं होती। बाबा समाचार शुरू होते ही चेतावनी दे देते। ऐ समाचार आ रहा है जरा हल्ला कम करना। इसके दो मतलब होते थे एक तो सभी लोगों को बातचीत नहीं करनी है। दूसरा छोटू और उसके भाई को भी ध्यान लगाकर समाचार सुनना है।

समाचार में आये नये नाम व घटनाओं को बाबा खूब विस्तार से बताते। किसी भी देश की घटना या राजनैतिक चर्चा को बाबा बड़ी सहजता से बताते। ऐसे में भूल जाते कि छोटू और उसके भाई को पढ़ना भी है। इन समाचारों पर बात की वजह से छोटू को सामाजिक अध्ययन की किताब में लिखी खूब सारी जानकारी मिल जाती।

यह वह दौर था जब ईराक–ईरान का युद्ध जोरों पर था। बाबा समाचार सुनते–सुनते कुछ ज्यादा ही परेशान हो जाते। उनके चेहरे पर गुस्सा और परेशानी देख छोटू सोचता लड़ाई ईराक–ईरान की हो रही है और बाबा फालतू में परेशान हो रहे हैं। लेकिन ऐसा बोलना बाबा की हड़कान खाने के लिये काफी होता। सो छोटू चुपचाप समाचार पर ध्यान देता। वहां सैनिकों के मरने और रेड क्रॉस द्वारा सैनिकों की सेवा के बारे में सुनता रहता।

बाबा से छोटू ईराक–ईरान की लड़ाई के बारे में पूछता। वहां हो रही लड़ाई के बारे में बताते–बताते बाबा वियतनाम वार के बारे में बताना नहीं भूलते। वियतनाम के बारे में बाबा कोयले से छोटा सा चित्र खींचकर बताते कि वियतनाम बहुत ही छोटा देश है जहां कम्युनिस्टों का शासन है। अमेरिका ने उनको बर्बाद करने के लिये लड़ाई कर दी। कई साल चली लड़ाई में वियतनाम ने अमेरिका के छक्के छुड़ा दिये। बाबा की बातों से छोटू के मन में भी वियतनाम के प्रति सहानुभूति उपजने लगती वहीं अमेरिका उसे किसी दुश्मन की तरह लगता।

लेकिन स्कूल में अमेरिका के राष्ट्रपति के बारे में पाठ पढ़कर फिर वह गहरे द्वंद्व में फंस जाता। अब्राहम लिंकन के जीवन संघर्ष और अमेरिका के लोगों के लिये उनके द्वारा किये प्रयासों को जब–जब वह पढ़ता तो उसे रह–रह कर रेडियो और बाबा की बात याद आती। फिर वह इन सबसे उबरने के लिये सोचता कि पाठ तो परीक्षा के लिये हैं। सो उन्हें याद करने लग जाता!

(लेखक, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन चमोली, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)